ओ३म्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि—10 जुलाई 2019

सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२०

युगाब्द-५१२०, अंक-११५, वर्ष-१२

ज्येष्ठ, विक्रमी २०७६ (जुलाई 2019)

मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'

कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश

सम्पर्क सूत्र: 9350945482

Web: www.aryanirmatrisabha.com

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

न यस्य देवा देवता न मर्ता आपश्चन शवसो अन्तमापुः। स प्ररिक्वा त्वक्षसा क्ष्मोदिव श्चमरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ —ऋ०-१। ७। १०। ५

व्याख्यान—हे अनन्तबल ! (न यस्य) जिस परमात्मा का और उसके बलादि सामर्थ्य का (देवाः) इन्द्रिय, (देवताः) विद्वान्, सूर्यादि तथा बुद्ध्यादि (न मर्ताः) साधारण मनुष्य, (आपश्चन) आप (प्राण) वायु, समुद्र इत्यादि सब (अन्तम्) पार कभी नहीं पा सकते, किन्तु (प्ररिक्वा) प्रकृष्टता से इनमें व्यापक होके अतिरिक्त (इनसे विलक्षण) भिन्न ही परिपूर्ण हो रहा हैं। सो (मरुत्वान्) अत्यन्त बलवान् इन्द्र परमात्मा (त्वक्षसा) शत्रुओं के बल का छेदक, बल से (क्ष्मः) पृथिवी को (दिवश्च) स्वर्ग को धारण करता है, सो (इन्द्रः) परमात्मा (ऊती) हमारी रक्षा के लिए (भवतु) तत्पर हो।

सम्पादकीय

छली गयी जनता ... ?

देश अंग्रेजों के आधीन था, आजादी के लिए संघर्ष करने वाले क्रान्तिकारी अपने जीवन को दांव पर लगा रहे थे, दूसरी ओर राजनैतिक आन्दोलन चल रहे थे, क्रान्तिकारियों में अधिसंख्य इस देश के मुख्य निवासी और बहुसंख्यक हिन्दू कहलाने वाले समुदाय के लोग ही थे, यदि ऐसा कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं है क्योंकि पं. रामप्रसाद बिस्मिल के प्रिय सखा असफाक उल्ला खाँ को एक ओर रखा जाए तो दूसरा कोई तथाकथित अल्पसंख्यक क्रान्तिकारी मुख्य मण्डली में दिखाई नहीं देता। किन्तु दूसरी ओर जो राजनैतिक आन्दोलन मोहनदास कर्मचन्द गांधी जी के अनुसार-अनुकूल चलाये जा रहे थे उसमें अनेक अल्पसंख्यक (मुस्लिम) प्रभुत्व जमाये हुए थे, जिन्होंने समय-समय पर अल्पसंख्यक शब्द पर कब्जा जमाकर मुस्लिम मतावलम्बियों के लिए अलग चुनाव क्षेत्रों की मांग की, परिणाम स्वरूप अंग्रेजों ने तुरन्त स्वीकार कर ली। इसी प्रकार समय-समय पर ये मुस्लिम मतावलम्बी अल्पसंख्यकवाद की राजनीति करते रहे, जिसके परिणाम स्वरूप अन्त में आजादी से पहले ही देश को बांट दिया गया। इतना ही नहीं, अपितु बहुसंख्यक हिन्दुओं का अपने तत्कालीन कांग्रेसी नेताओं पर विश्वास होने के फलस्वरूप बहुसंख्यकों का बहुसंख्या में कत्लेआम किया गया। और इस कत्लेआम का प्रमुख कारण था हिन्दू कहे जाने वाले कांग्रसी नेताओं द्वारा बैठाया गया यह अन्धविश्वास कि देश का बंटवारा होगा ही नहीं। जिससे हिन्दू मतावलम्बियों को अन्तिम समय तक यह लगता रहा कि देश नहीं टूटेगा, बस थोड़ा बहुत हंगामा होकर सब कुछ ठीक हो जायेगा। फलस्वरूप न तो वे बंटवारे को तैयार थे और न ही अपनी एवं अपने स्वजनों की सुरक्षा के लिए ही तैयार हुए। जबकि दूसरी ओर उसी राजनैतिक आन्दोलन में सम्मिलित अल्पसंख्यक मुस्लिम मतावलम्बी खुले आम अपने-अपने वहशी गुण्डों की फौजें तैयार कर रहे थे, आम मुस्लिम जनता में भाषण देते थे, उन्हें उकसाते थे, तैयार करते थे और तैयार हुए भी, जिसका भयंकर परिणाम देश ने और देश की बहुसंख्यक हिन्दू जनता ने प्रत्यक्ष भोगा।

१५ अगस्त को रात १२ बजे लालकिले से लाखों लोगों की लाशों के बीच आजादी का जश्न मनाया गया, भाषण हुए, नेहरू जैसे नेताओं ने देश को सुख, शान्ति और विकास के सपने दिखाए। उधर अल्पसंख्यक मुसलमान एक तिहाई भूमि पर आतंक के बल से कब्जा कर गये, अल्पसंख्यक से बहुसंख्यक हो गये। किन्तु दुर्भाग्य कि भारत में फिर भी अल्पसंख्यक मुस्लिम रह गये जो आज भी २० प्रतिशत से अधिक होते हुए भी अल्पसंख्यक ही बने हुए हैं। आजादी के काल से कांग्रेस और कांग्रेसी मानसिकता के सभी राजनैतिक दलों ने बहुसंख्यक हिन्दुओं से न डरते हुए अल्पसंख्यक तुष्टिकरण का भयानक खेल खेलना प्रारम्भ कर दिया। परिणाम

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

स्वरूप ''त्वया हिन्दूभूमे सुखं वर्धितोऽहम्'' की प्रार्थना दैनिक शाखा में करने वाले स्वयंसेवकों को हिन्दुओं की चिन्ता हुई, जिससे प्रथम भारतीय जनसंघ और काफी उठापटक के बाद दृढ़ जनसंघी नेताओं को ठिकाने लगाकर उदारवादी (सेक्युलरवादी) अटल-आडवानी की जोड़ी ने ''भारतीय जनता पार्टी'' के माध्यम से हिन्दू हित की विपक्षी राजनीति की। यूं तो अटल जी की सरकार के काल से ही भाजपा भी तुष्टिकरण के छोटे-छोटे खेल खेलने लगी थी, जिससे २००४ में हिन्दु जनता ने इसे फिर से अपने हित चिन्तन के लिए विपक्ष में भेज दिया और ठीक दश वर्ष तक राजसत्ता में बैठे कांग्रेस और कांग्रेसी मानसिकता के राजनैतिक दलों से प्रताड़ित होने को विवश बने रहे।

२०१४ में जनता ने दश वर्ष की प्रताड़ना का पूरा बदला लेते हुए ''हिन्दू हित'' की बात करने वाली भाजपा को नहीं, अपितु (विपक्षी और देशघातक प्रवृत्ति के सेक्यूलरवादियों द्वारा खलनायक बनाये गये) हिन्दू हृदय सम्राट श्री मोदी जी की सरकार को सत्तासीन किया, किन्तु क्या अल्पसंख्यक (मुस्लिम) तुष्टिकरण समाप्त हो गया? नहीं। अपितु कुछ परिवर्त्तित रूपों में सामने आने लगा। किन्तु बहुसंख्यक जनता के पास विकल्पहीनता, बेबसी और मजबूरी के फलस्वरूप २०१४ से भी अधिक बहुमत देकर पुनः ''मोदी है तो मुमकिन है'' कर दिखाया। किन्तु क्या अल्पसंख्यक (मुस्लिम) तुष्टिकरण का हल हुआ? क्या हल होने के कोई लक्षण दिखाई देने लगे? क्या हल होने की कोई सम्भावना भविष्य में है? नहीं। अपितु यह तुष्टिकरण का खेल अब खुलकर खेला जाने लगा है, पांच करोड़ मुस्लिम छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की घोषणा ने इरादे साफ कर दिये हैं। ''सबका विश्वास'' का नारा सुनकर अनेक हिन्दू हित की बात करने वाले भी सेक्यूलर हो गये। जनता छली गयी है। सावधान बहुसंख्यक! सावधान! २०२४ का नारा होगा- ''अबकी बार चार सौ पार, अबकी बार शाह सरकार।''

पाठकगणों! विचारना होगा और छले गये इस बहुसंख्यक हिन्दू समाज में हताशा और निराशा का वातावरण बने, इससे पहले ही आशा का संचार करना होगा। यही हम सबका कर्तव्य है, इसी में सभी का हित है।।

गृहस्थ संबंध

-आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर,

गृहस्थ सांसारिक सुख का आधार है, नर-नारी सब सुख ही की इच्छा से गृहस्थ में प्रवेश करते हैं लेकिन क्या उन्हें वह अभिष्ट सुख मिल पाता है? जहाँ तक मेरा अनुभव है मेरे जैसे अनेकों लोग इससे सुख पाते हैं, तब वेद वाक्य ''क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ।'' साकार होता लगता है। संसार मे यह स्थापित सत्य है कि सुखी लोगों को देखकर सुख का प्रवाह बहता है, और दुःखी लोगों को देखकर दुःख का प्रवाह बहता है। अभी भी समाज में उत्साह व उल्लास पूर्वक विवाह किए जाते हैं, युवक-युवतियों को ही नहीं माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी आदि परिजनों को भी उनके विवाह की सूचना उत्साहित व आह्लादित करती है। अतः विवाह आज भी सुख का आधार तो है ही । किसी ने ठीक ही कहा है कि जो गृहस्थ की निन्दा करता है वह वेद की निन्दा करता है।

किंतु इतना सब होने पर भी हम अनेक लोगों के दुःख को नकार नहीं सकते, कहीं पत्नी दुःखी है, कहीं पति, तो कहीं दोनों। दोनों के दुःखी रहने से इनके परिवार भी कहाँ प्रसन्न रह सकते हैं? ये विषाद इतना भयानक होता है कि इनमें से कई तो कहते हैं कि मैंने विवाह करके ही गलती की है। इन गलती वाले विवाह में यदि बच्चे भी पैदा हो गए हों तो फिर विडम्बना और भयंकर हो जाती है। अब कुछ भी हो जावे बालकों की बर्बादी तो सुनिश्चित ही है। ऐसे परिवारों की संख्या बढती ही जा रही हैं जिससे समाज का विद्रूप चेहरा देखकर विचारवान लोग सहम जाते हैं। ये लोग किसी की व्यक्तिगत चिंता करें ना करें लेकिन ये समाज की चिंता तो करते ही हैं कि ये परिवार भी सुख से क्यों नहीं रह सकते? क्या इन परिवारों में कुछ ऐसा बहुत बड़ा घटित हो गया है जिसनें इनका सुख-चैन छीन लिया है? लेकिन यह सुनिश्चित सत्य है कि ऐसे तो विरले ही परिवार हैं जिनमें कुछ बड़ा घटित हुआ हो! अधिकांशतः छोटी-छोटी बातों से परिवार उजड़ रहे हैं। यह चिंता तब और भी बढ़ जाती है जब संसार की सबसे अच्छी परिवार व्यवस्था वाले सनातन धर्मी परिवार भी इसमें सम्मिलित हैं वे भी दुःख पा रहे हैं।

जब हम इन उजड़ते बर्बाद होते घरों का विश्लेषण करते हैं तो देखते हैं कि इन छोटी-छोटी त्रुटियों को यदि सुधार लें तो सुखी हो सकते हैं, किंतु यह भी इतना ही सत्य है कि वे अपनी इन त्रुटियों को सुधार नहीं पा रहे हैं और पीड़ित हैं। क्या ये लोग सुखी नहीं रहना चाहते? क्या ये अपने परिजनों को प्रसन्न रखना नहीं चाहते हैं? वास्तव में ये पीड़ित हैं और कौन सुधिजन इनकी उस मार्मिक पीड़ा को नहीं अनुभव करता है? इतना विचारने पर प्रश्न आता है कि अन्ततः वो कौन सी त्रुटियां है जिन्हें नहीं सुधारने से ये सभी परिवार दारुण दुःख सहने को विवश हैं?

आओ समझने का प्रयत्न करें--प्रथम कारण है बिना गुण, कर्म और स्वभाव के मिलाए विवाह करना। इस कारण से दम्पत्ति में किसी एक को और कभी-कभी दोनों को एकपक्षीय समझौता करना पड़ता है, नहीं करने पर जीवन यापन कठिन हो जाता है। इन सबसे बढ़कर एक कारण है- ईश्वर की आज्ञा का न मानना, यह निश्चित ही दुःख का हेतु है। विवाह में सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि वधु-वर एक दूसरे के साथ सुख से रहने को प्रतिबद्ध हों। यह प्रतिबद्धता इतनी गहरी होनी चाहिए कि वेद की भावना के निकट रह सकें **'ओ३म् समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ। सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ।।** ऋषि दयानंद इसका अर्थ करते हुए लिखते हैं कि हम दोनों के आत्मा एक दूसरे के साथ दृढ़ प्रेम को ऐसे धारण करें -

१. प्रतिबद्धता- जैसे जल शान्त रहता, शान्त करता, एक साथ मिल जाता है तो एक ही हो जाता है, फिर अलग होने की सम्भावना ही समाप्त हो जाती है। यदि पत्नी और पति इतने प्रतिबद्ध हैं तो सारे विवाद समाप्त किये जा सकते हैं। ये भावना गृहस्थ जीवन की आधारभूत है।

२. वचनबद्धता- यह कि जैसे प्राणवायु से कोई भी स्त्री या पुरुष अप्रसन्न नहीं हो सकता है वैसे ही एक दूसरे से प्रसन्न रहने की वचनबद्धता। कहना-सुनना, विचार-विमर्श, सहमति-असहमति अपने स्थान पर रहेगी और वचनबद्धता का आचरण जीवन का दर्शन बना रहेगा।

३. परमात्मावत् धारण- जैसे परमात्मा सब जगत को धारण करता है वैसे पत्नी-पति एक दूसरे को धारण करें। यह धारण करना विशेष इस रूप में है कि यहाँ छूटने या छोड़ने का विकल्प ही नहीं है। सदा साथ-साथ बने रहना है। मनु महाराज ने भी कहा है कि पत्नी और पति का लम्बे समय तक वियोग न रहना चाहिए। क्योंकि यह स्त्री पुरुषों में दोष उत्पन्न करने वाला बडा दुर्गुण है।

४.आवश्यकता अनुभव- उपदेशक जैसे श्रोताओं की आवश्यकता अनुभव करता है, वैसे ही पत्नी-पति एक दूसरे की आवश्यकता समझें, उपदेशक का अस्तित्व तब तक है जब तक श्रोता समक्ष हैं, उसी प्रकार ये दोनों भी एक दूसरे के कारण पति और पत्नी रूप पदवी को प्राप्त हुए हैं।

ये चार बातें गृहस्थ आश्रम को स्वर्ग बनाने के लिए नींव ही हैं। गृहस्थों को चाहिए कि इन पर विचार कर किसी को दिखाने मात्र के लिए नहीं बल्कि अपने परिवार व स्वयं के सुख के लिए इसका पूर्ण सत्य निष्ठा से स्वजीवन मे धारण करें।

क्रमशः ...

चरैवेति, चरैवेति, चरैवेति.......।

- आचार्य सतीश

आर्य निर्माण, उसके संरक्षण व उसके विनियोग का कार्य आर्यों, आचार्यों के द्वारा वर्षभर चलाया जाता रहता है। आइए थोड़ा सा आकलन जून मास में हुए कार्यों का करते हैं क्योंकि जून मास विद्यालयों, शिक्षकों के अवकाश का मास रहता हैं जिससे इस मास में थोड़ी सी गति बढ़ जाती है।

विगत जून मास में आर्य निर्मात्री सभा के द्वारा २८ दो दिवसीय आर्य निर्माण सत्रों का आयोजन किया गया। जिनमें से १० सत्र केवल महिलाओं के लिए थे। ये सत्र भी देशभर में फैले हुए थे- बंगाल, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखण्ड व चण्ड़ीगढ में आयोजित किए गए। देखा जाए तो लगभग प्रतिदिन दो स्थानों पर पूरे मास सत्र चलता रहा। इन सत्रों में हजारों की संख्या में पुरुष व महिलाओं ने भाग लिया जिनका इससे पहले इस कार्यक्रम से कोई परिचय नहीं था।

दूसरी ओर एक अष्टदिवसीय प्रचारक कक्षा का आयोजन भी इसी मास हुआ जिसमें ५० आर्यों ने प्रचारक का पाठ्यक्रम पूरा किया और विद्या लेकर प्रचारकार्य के लिए तैयार हुए। राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा द्वारा भी तीन स्थानों पर अष्टदिवसीय तथा दो स्थानों पर पंचदिवसीय छात्र शिविरों का आयोजन किया गया जिनमें हजारों छात्रों ने भाग लिया और भावी पीढ़ी को संरक्षित करने का कार्य किया गया। इसी मास राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा द्वारा दो शिविर क्षत्रियों के लिए लगाए गए जिनमें सैकड़ों क्षत्रियों को प्रशिक्षित किया गया। इसके अलावा भी कहीं आर्य समाजों की स्थापना व जनपदीय बैठकों आदि का आयोजन तो सामान्य रूप से चलता ही रहा।

और यह सब कार्य उस जून मास में सम्पन्न किए गए जब सर्वाधिक गर्मी पड़ती है और लोग अपने नियमित कार्यक्रमों को भी स्थगित कर देते हैं। यह सब आर्यों, आर्याओं व आचार्यों के कठिन परिश्रम का ही परिणाम है। गति से कर्म होना ही चाहिए जिससे समाज में अधिक से अधिक जागरूकता पैदा की जा सके और राष्ट्र निर्माण के कार्य को भी गति दी जा सके। इन सभी कार्यों के लिए सभा के अधिकारी तथा आर्यगणों का कठिन परिश्रम आवश्यक था जो उन्होंने किया भी।

जिसका लक्ष्य सामान्य हो वह तो इतने कार्य से सन्तुष्ट भी हो सकता है और अपने को गौरवान्वित भी अनुभव कर सकता है लेकिन हमारे लक्ष्य को देखते हुए इतना ही कार्य हमारे लिए पर्याप्त नहीं है और सन्तुष्टि प्रदान नहीं कर सकता। हमें और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। अपनी गति को और बढ़ाने की आवश्यकता है। हालांकि कार्य वर्ष भर लगभग इसी गति से थोड़े बहुत अन्तर के साथ चलता रहता है लेकिन राष्ट्र की परिस्थितियों को देखते हुए कार्य की गति को बढ़ाने की हमें आवश्यता है, अधिक पुरुषार्थ की आवश्यकता है, अभी भी शायद हम उतना कार्य नहीं कर पा रहे है जितना करना चाहिए। आर्यों, आर्याओं आओ अपनी गति को और बढ़ाएं और तेजी से आर्य निर्माण व संरक्षण करें, ऋषियों के संदेश का पालन करें चरैवेति, चरैवेति, चरैवेति.......।

छात्र गुरुकुलों का आयोजन

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा का "छात्र गुरुकुल" (शिविर) आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय-चित्तौड़ाझाल, नंगला कबीर, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश की कुछ झलकियां। यहां पर आठ दिन तक मेरठ, बागपत, सहारनपुर, बिजनौर, अमरोहा एवं मुजफ्फरनगर के ११६ छात्रों ने निवास करते हुए गुरुकुलीय विद्या को ग्रहण किया, साथ ही आत्मरक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर १६ जून से २३ जून तक चला। शिविर के आयोजन एवं व्यवस्थाओं में कार्यकर्ताओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। छात्रों के भोजन एवं जलपान आदि की व्यवस्थाओं में सहयोगियों ने श्रद्धापूर्वक योगदान दिया। अभिभावकों की प्रतिक्रिया उत्साह-जनक रही।

मृत्यु दे दो, यज्ञोपवीत नहीं देंगे।

आचार्य धर्मपाल आर्य
अध्यक्ष, संरक्षिणी सभा, हरियाणा

यह एक सत्य घटना है। ह्रास की सारी सीमाएँ लांघता वर्तमान में यह भूखण्ड और इस भूभाग पर अपने ही राष्ट्र में, अपनी ही भूमि, अपने ही घर में, विद्या के चिन्ह यज्ञोपवीत हेतु संघर्ष करता युवा। इसी भूखण्ड पर जन्म लेकर भी यज्ञोपवीत की रक्षा हेतु अपनी मृत्यु तक का वरण करने में भी संकोच न करते अपने जीवन से भी ज्यादा यज्ञोपवीत के तीन सूत्रों को महत्व देने वाले युवागण। बात यज्ञोपवीत के तीन सुत्रों की नहीं है, बात है विचारधारा की, जिस विचारधारा हेतु हमारे पूर्वजों ने अमूल्य जीवन की भी प्रवाह नहीं की थी।

औरंगजेब का वो कालखण्ड जिसमें सैकड़ों यज्ञोपवीत कर्तन करके भोजन करने वाला, रोटियों के बदले चोटियों को कटवाने वाला ब्रिटिश शासन, उसके उपरान्त भी उस विचारधारा को संजोए हमारा यह राष्ट्र बढ़ता रहा। ऐसी परिस्थितियों में पाखण्डों के मझधार में डूबते इस राष्ट्र को वेद रूपी नाव से पार लगाने के लिए महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ और जीवन की आशाएं बलवती हुई। शास्त्रों में अशुद्धि करके विदेशियों द्वारा जो आपस मे विघटन बढाया जा रहा था, इसी विघटन को शास्त्रों में शोधन करके ऋषि द्वारा दूर किया गया। शास्त्रों का शोधन तो हो चुका था परन्तु शास्त्रों की इस अशुद्धि ने समाज पर ऐसा प्रभाव छोड़ दिया था कि समाज में जाति उपजातियों की खाईयां बढ़ती चली गई। अब वह शोषित समाज भी अपने को शोधित होने हेतु तरसती आखों से देख रहा था। इस विकट परिस्थिति में देव दयानन्द ने शुद्धिकरण का ऐसा आन्दोलन चलाया कि शताब्दियों से जिनसे यज्ञोपवीत छिनते आ रहे थे, उन पर यज्ञोपवीत फिर से विद्या के साथ शोभायमान होने लगे अर्थात् विद्या के साथ आर्य समाज रूपी संस्था में लाखों लोग जुड़ते चले गए। यह शुद्धिकरण अनवरत चलता रहा। इस शुद्धिकरण में आर्य समाज ने श्रद्धानन्द व लेखराम जैसे अनेक योद्धाओं की आहुति दे दी। आर.एस.एस. जैसी संस्थाओं ने अपने लाभ के लिए इस शुद्धिकरण आदोलन को छिन्न-भिन्न करते हुए बहुत सी विषमताएं पैदा कर दी और यह शुद्धिकरण आंदोलन धीरे-धीरे अपने स्वरुप को खोता चला गया। परन्तु कहते हैं मेघ कितने काले गहरे हों सूर्य उन्हें छिन्न-भिन्न कर ही देता है।

इन्हीं परिस्थितियों में एक सभा का निर्माण हुआ, जिसका नाम राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा रखा गया। उस घोर घने मेघ को चीरती हुई किरणें समाज रूपी धरती पर पड़ी, इस समाज को वेद से भिन्न जिन विचारधारा रूपी नालों ने दूषित कर दिया था, उस समाज का शोधन फिर से शुरू हो गया और इस सभा ने फिर से शुद्धिकरण को गति प्रदान की। शुद्धिकरण में विद्या देकर यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता है, यह शुद्धिकरण की अग्नि समाज से पाखण्ड का नाश करती हुई समाज के उस छोर तक भी पहुंची जहां यज्ञोपवीत को पहनना पाप समझा जाता रहा है। परन्तु यह तो विद्या की वह अग्नि थी जिससे समाज का वह अंग परिशुद्ध हो गया जिसे समाज के ही तथाकथित बुद्धिजीवियों ने बुद्धिहीन, अछूत कहकर तिरस्कृत कर दिया था और समाज दलित कहकर दुत्कार रहा था। ऐसे समाज पर जब शुद्धिकरण की तपत पड़ी तो उस तपती ज्वाला से ऐसा आश्चर्यजनक निखार आया कि जो निखार कभी हकीकतराय सरीखे पूर्वजों में आया था कि जिन्होंने यज्ञोपवीत हेतु अपना जीवन लगा दिया, जिस विचारधारा के लिए हमारे पूर्वज हंसते-हंसते फांसी पर झूल गए।

वही अग्नि १५० वर्षों के उपरान्त हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी में दृष्टिगोचर होने लगी, जिसे देखकर प्रथम बार प्रसन्नता के साथ भय भी हुआ क्योंकि अपने जीवन में प्रथम बार वेद विचारधारा की अग्नि को फड़कते देखा, देखा कि विचारधारा में कितनी शक्ति है और जाना विचारधारा नाम है- निडरता का, स्वतन्त्रता का, अन्याय के विरूद्ध लडने का, आस्तिकता का और यह वेद की विचारधारा उन्हें विरासत में नहीं मिली थी, यह दो दिवसीय लघु गुरुकुल का परिणाम था।

यह निडरता थी जनपद यमुनानगर के एक ग्राम में जहां चर्मकार जाति के युवक दो दिवसीय लघु गुरुकुल में विद्या लेकर अन्धकार से प्रकाश में आए और यज्ञोपवीत धारण किया। यज्ञोपवीत धारण करके जैसे ही वे अपने गांव गये वैसे ही उन्हीं के अपनी जाति के लोगों ने यज्ञोपवीत देखकर प्रश्नों की बौछार कर दी। परन्तु विद्या रूपी छाता ऐसा काम आया कि उनकी एक न चली। तब उन्हें स्वजातिद्रोही व गद्दार जैसे शब्दों का सामना करना पड़ा, बार बार अपमानित करने पर अन्याय के विरूद्ध आर्यों ने भी कमर कस ली और चर्मकार जाति से सम्बन्ध रखने वाले लोगों की ग्राम-पंचायत बुलाई। पंचायत का एक ही उद्देश्य था कि यज्ञोपवीत निकलवाया जाए, परन्तु पंचायत को कहां अंदेशा था कि यज्ञोपवीत धारी वेद सिद्धान्तों के प्रति इतने दृढ़ होते हैं कि उन्हीं की बोलती बन्द हो जाएगी। आर्यों ने जब भरी पंचायत में सन्त रविदास की मूर्ति पर यज्ञोपवीत दिखाया और सन्त रविदास जी के कुछ दोहे वेद सम्मत दिखाए तो मानो सारी पंचायत को सांप सूंघ गया। विपक्ष का एक भी उत्तर नहीं आया। तब विपक्ष ने आर्यों पर अम्बेडकर जी का अपमान करने का दोषारोपण किया, तब आर्यों ने वो प्रमाण दिखाया जहां अम्बेडकर जी बम्बई में ५०० महारों का शुद्धिकरण करते हुए यज्ञोपवीत पहनाते हैं व खुद भी पहनते हैं। जब पंचायत में विपक्ष से कोई उत्तर नहीं बन पड़ा तो उन्होंने आर्यों पर हमला कर दिया तथा यज्ञोपवीत तोड़ने का प्रयास किया परन्तु आर्य तो मानो गुरुकुल से ऊर्जा लेकर आए थे उन्होंने विपक्ष का डटकर सामना किया। यह संघर्ष जब कानून के गलियारों तक पहुंचा तो तथाकथित दलित नेताओं के भी कान खड़े हो गए और आर्यों को जान से मारने तक की धमकियां मिलने लगी। परन्तु धन्य हैं वे आर्य जो जान हथेली पर रख कर यज्ञोपवीत की रक्षा करते रहे।

पंचायत में आर्यों के प्रश्नोत्तरों से गांव का बुद्धिजीवी वर्ग आर्यों के पक्ष में आ गया और कानूनी तौर पर अपने क्षेत्र के सभी आर्यों का अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग होने पर अन्त में विपक्ष को बुरी तरह मुंह की खानी पड़ी। अन्त में उन्होंने आर्यों को लिखित में माफीनामा देना पड़ा।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	02 जुलाई	दिन-मंगलवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-मृगशिरा
पूर्णिमा	16 जुलाई	दिन-मंगलवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पूर्वाषाढ़ा
अमावस्या	01 अगस्त	दिन-गुरुवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पुष्य
पूर्णिमा	15 जून	दिन-गुरुवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-श्रावण

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

प्रश्न 'पुरुषार्थ' किसको कहते, और उसके कितने भेद हैं?

उत्तर-उद्योग का नाम **'पुरुषार्थ',** और उसके चार भेद हैं। **एक**-अप्राप्त की इच्छा । **दूसरा**-प्राप्त की यथावत् रक्षा। **तीसरा**-रक्षित की वृद्धि। और **चौथा**-बढ़ाये हुए पदार्थों का धर्म में खर्च पुरुषार्थ के भेद है। जो-जो न्याय धर्म से युक्त क्रिया से अप्राप्त पदार्थों की अभिलाषा करके उद्योग करना। उसी प्रकार उसकी सब प्रकार से रक्षा करनी कि वह पदार्थ किसी प्रकार से नष्ट-भ्रष्ट न हो जाए। उसको धर्मयुक्त व्यवहार से बढ़ाते जाना। और बढ़े हुए पदार्थ को उत्तम व्यवहारों में खर्च करना, ये चार भेद हैं।

[तन-मन-धन का सदुपयोग]

(प्र॰) किस-किस प्रकार से किस-किस व्यवहार में तन-मन-धन लगाना चाहिए?

(उ॰) निम्नलिखित चारों में -विद्या की वृद्धि, परोपकार, अनाथों का पालन और अपने सम्बन्धियों की रक्षा। विद्या [की वद्धि] के लिये शरीर को आरोग्य और उससे यथायोग्य क्रिया करनी। मन में अत्यन्त विचार करना-कराना। और धन से अपने सन्तान और अन्य मनुष्यों को विद्या दान करना-कराना चाहिये।

परोपकार के लिए शरीर और मन से अत्यन्त उद्योग, और धन से नाना प्रकार के व्यवहार तथा कारखाने खड़े करने कि जिनमें अनेक मनुष्य कर्म करके अपना-अपना जीवन सुख से व्यतीत किया करें।

'अनाथ' उनको कहते हैं कि जिनका सामर्थ्य अपने पालन करने का भी न हो। जैसे कि बालक, वृद्ध, रोगी, अंग-भंग आदि हैं। उनको भी तन मन धन लगाकर सुखी रखके जिस-जिस से जो-जो काम बन सके, उस-उस से वह-वह कार्य सिद्ध कराना चाहिये कि जिससे कोई आलसी होके नष्टबुद्धि न हो।

और **अपने सन्तान आदि** मनुष्यों के खान-पान अथवा विद्या की प्राप्ति के लिए जितना तन-मन-धन लगाया जाये उतना थोड़ा है। परन्तु किसी को निकम्मा कभी न रहना और न रखना चाहिए।

[विवाहिक स्त्री-पुरुष का पारस्परिक वर्ताव]

(प्र॰) विवाह करके स्त्री-पुरुष आपस में कैसे वर्तें?

(उ॰) कभी कोई किसी का अप्रियाचरण, अर्थात् जिस-जिस व्यवहार से एक-दूसरे को कष्ट होवे, सो काम कभी न करें, जैसे कि व्यभिचार आदि। एक-दूसरे को देखकर प्रसन्न हों, एक-दूसरे की सेवा करें। पुरुष भोजन वस्त्र, आभूषण और प्रियवचन आदि व्यवहारों से स्त्री को सदा प्रसन्न रखे, और घर के सब कृत्य उसके अधीन करे। स्त्री भी अपने पति से प्रसन्नवदन, खान-पान, प्रेमभाव आदि से उसको सदा हर्षित रक्खे कि जिससे उत्तम सन्तान हों, और सदा दोनों में आनन्द बढ़ता जाय।

(प्र॰) ऐसा न करें तो क्या बिगाड़ है?

(उ॰) सर्वस्व-नाश। क्योंकि परस्पर प्रीति के विना न गृहाश्रम का किञ्चित् सुख, न उत्तम सन्तान, और न प्रतिष्ठा वा लक्ष्मी आदि श्रेष्ठ पदार्थों की प्राप्ति कभी होती है।

सुनो मनु जी क्या कहते हैं-

सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥ १॥

-मनु॰ अ॰ ३ । ६० ॥

जिस कुल में स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री आनन्दित रहती है, उसी में निश्चित कल्याण स्थित रहता है। परन्तु यह बात तब होगी कि जब ब्रह्मचर्य से विद्या शिक्षा ग्रहण करके युवावस्था में परस्पर परीक्षा करके प्रसन्नतापूर्वक स्वयंवर ही विवाह करेंगे। क्योंकि जितनी सुख विद्या और उत्तम प्रजा की हानि बाल्यावस्था में विवाह से होती है, उतना ही सुख-लाभ ब्रह्मचर्य से शरीर और आत्मा की पूर्ण युवावस्था में परस्पर प्रीति से विवाह करने से होता है।

जो मनुष्य परस्पर प्रीति से स्वयंवर विवाह करके सन्तानों को उत्पन्न करते हैं, उनके सन्तान भी ऐसे योग्य होते हैं कि लाखों में एक ही होते हैं कि जिनमें बुद्धि बल पराक्रम धर्म और सुशीलतादि शुभगुण पूर्ण होके महाभाग्यशाली कहाकार अपने कुल को अति प्रशंसित कर देते हैं।

[मनुष्यपन का लक्षण]

(प्र॰) 'मनुष्यपन' किसको कहते हैं?

(उ॰) इस मनुष्य जाति में एक ऐसा गुण है, कि वैसा किसी दूसरी जाति में नहीं पाया जाता।

(प्र॰) वह कौन सा है?

(उ॰) जितने मनुष्य से भिन्न जातिस्थ प्राणी हैं, उनमें दो प्रकार का स्वभाव है-बलवान् से डरना, निर्बल को डराना और पीड़ा देकर अर्थात् दूसरे का प्राण तक निकालके अपना मतलब साध लेना देखने में आता है। जो मनुष्य ऐसा ही स्वभाव रखता है, उसको भी इन्हीं जातियों में गिनना उचित है। परन्तु जो निर्बलों पर दया, उनका उपकार, और निर्बलों को पीड़ा देने वाले अधर्मी बलवानों से किञ्चिन्मात्र भी भय-शंका न करके, इनको परपीड़ा से हटाके निर्बलों की रक्षा तन मन और धन से सदा करना है, वही मनुष्य-जाति का निज गुण है। क्योंकि जो बुरे कामों के करने में भय, और सत्य कामों के करने में किञ्चित् भी भय-शंका नहीं करते, वे ही मनुष्य धन्यवाद के पात्र कहाते हैं।

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-
www.aryanirmatrisabha.com
पर उपलब्ध है। अतः आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अतः पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक
www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका पर जाएं।

18 जून-16 जुलाई 2019 आषाढ़ ऋतु- वर्षा

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
	मूल कृष्ण प्रतिपदा 18 जून	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण द्वितीया 19 जून	उत्तराषाढ़ा कृष्ण तृतीया 20 जून	श्रवण कृष्ण चतुर्थी 21 जून	धनिष्ठा कृष्ण पंचमी 22 जून	शतभिषा कृष्ण षष्ठी 23 जून
पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण सप्तमी 24 जून	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण अष्ठमी 25 जून	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण नवमी 26 जून	रेवती कृष्ण नवमी 27 जून	अश्विनी कृष्ण दशमी 28 जून	भरणी कृष्ण एकादशी 29 जून	कृतिका कृष्ण द्वादशी/त्रयोदशी 30 जून
रोहिणी कृष्ण चतुर्दशी 1 जुलाई	मृगशिरा कृष्ण अमावस्या 2 जुलाई	आर्द्रा/पुनर्वसु शुक्ल प्रतिपदा 3 जुलाई	पुष्य शुक्ल द्वितीया 4 जुलाई	आश्लेषा शुक्ल तृतीया 5 जुलाई	मघा शुक्ल चतुर्थी 6 जुलाई	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल पंचमी 7 जुलाई
उ॰ फाल्गुनी शुक्ल षष्ठी/सप्तमी 8 जुलाई	हस्त शुक्ल अष्टमी 9 जुलाई	चित्रा शुक्ल नवमी 10 जुलाई	स्वाती शुक्ल दशमी 11 जुलाई	विशाखा शुक्ल एकादशी 12 जुलाई	अनुराधा शुक्ल द्वादशी 13 जुलाई	ज्येष्ठा शुक्ल त्रयोदशी 14 जुलाई
मूल शुक्ल चतुर्दशी 15 जुलाई	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल पूर्णिमा 16 जुलाई					

17 जुलाई- 15 अगस्त 2019 श्रावण ऋतु- वर्षा

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		उत्तराषाढ़ा कृष्ण प्रतिपदा 17 जुलाई	श्रवण कृष्ण द्वितीया 18 जुलाई	धनिष्ठा कृष्ण द्वितीया 19 जुलाई	शतभिषा कृष्ण तृतीया 20 जुलाई	शतभिषा कृष्ण चतुर्थी 21 जुलाई
पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण पंचमी 22 जुलाई	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण षष्ठी 23 जुलाई	रेवती कृष्ण सप्तमी 24 जुलाई	अश्विनी कृष्ण अष्टमी 25 जुलाई	भरणी कृष्ण नवमी 26 जुलाई	कृतिका कृष्ण दशमी 27 जुलाई	रोहिणी कृष्ण एकादशी 28 जुलाई
मृगशिरा कृष्ण द्वादशी 29 जुलाई	आर्द्रा कृष्ण त्रयोदशी 30 जुलाई	पुनर्वसु कृष्ण चतुर्दशी 31 जुलाई	पुष्य कृष्ण अमावस्या/प्रतिपदा 1 अगस्त	आश्लेषा शुक्ल द्वितीया 2 अगस्त	मघा/पू॰ फाल्गुनी शुक्ल तृतीया 3 अगस्त	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल चतुर्थी 4 अगस्त
हस्त शुक्ल पंचमी 5 अगस्त	चित्रा शुक्ल षष्ठी 6 अगस्त	स्वाती शुक्ल सप्तमी 7 अगस्त	विशाखा शुक्ल अष्टमी 8 अगस्त	अनुराधा शुक्ल नवमी 9 अगस्त	ज्येष्ठा शुक्ल दशमी 10 अगस्त	मूल शुक्ल एकादशी 11 अगस्त
पूर्वाषाढ़ा शुक्ल द्वादशी 12 अगस्त	उत्तराषाढ़ा शुक्ल त्रयोदशी 13 अगस्त	श्रवण शुक्ल चतुर्दशी 14 अगस्त	श्रवण शुक्ल पूर्णिमा 15 अगस्त		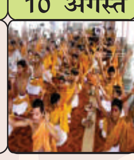	उपाकर्म पर्व 15 अगस्त

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

Swami Dayanand had been in Lahore for two months, when his followers began to force him for the establishment of an Arya Samaj in Lahore. It was felt that the rules framed at Bombay which were principles and bye-laws combined needed revision. The re-casting was done by Swamiji in collaboration with L.Jiwan das, Lal Mul Raj, M.A. District judge and a few other gentleman. The Niyamas and Upaniyamas, as framed were announced at the inaugural meeting of the Arya Samaj held on the 24th june, 1877, at the Kothi of Dr. Rahim Khan. Later on, these were adopted by the Bombay Samaj and are recognised in all the Arya Samajs in Indian or out side it, up to the present day. These principles were:

1. The primordial Root-The eternal unseen sustains of all true knowledge and of objects made known by true knowledge ever if all these is the supreme God.

2. God is personification of Existence, Intelligence and Bliss. He is Formless, almighty, just Benevolent unborn, Endless and Infinite, Unchangeable, Beginning less, Incomparable, support of all, Lord of all, All pervading Omni-scient and Controller of all from within Undecaying, Imperishable, Fearless, External, Holy and Maker of the Universe.

3. The Veda is the scripture of true knowledge. It is the paramount duty of every one to learn and teach the Veda, to hear it read and to recite it to others.

4. We should ever be ready to embrace Truth and forsake untruth.

5. All acts should be done in accordance with Dharma, deliberating what is right and wrong.

6. The prime object of the Arya Samaj-Vedic Church-is to do good to the world, that is to promote physical, spiritual and social good of every sensible being.

7. Our conduct towards all should be guided by Love, Righteousness and Justice.

8. We should dispel avidya- Nescience and promote vidya- science, spiritual and physical.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

प्रत्येक सत्र बहुत ही रोचक, प्रेरणादायक, ओजपूर्ण लाभदायक एवं देशभक्ति को जागृत करने हेतु मन, मस्तिष्क एवं आत्मा को ओतप्रोत करने वाला रहा। प्राचार्या जी का ज्ञान विस्तृत एवं इतना अधिक प्रमाणित प्रतीत हुआ कि स्वयं में वैदिक प्रवक्ता बनने की इच्छा प्रबल हो गई। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि प्राचार्या जी का स्वास्थ्य अच्छा रहे और वह इस कार्य को यूँ ही प्रेरित करती रहें। मैं उनके उक्त कार्य हेतु सदैव ऋणी एवं आभारी रहूँगी। मैं आपके अच्छे स्वास्थ्य एवं प्रगति की मंगल कामना करती हूँ। धन्यवाद!

मैंने सम्पूर्ण सत्र बहुत ही मनोयोग से सुना और प्राचार्या जी द्वारा बताये गये महत्वपूर्ण सिद्धान्तों पर चलकर छात्र निर्माण में कार्य करूँगी। मैं पूरी निष्ठा से कार्य करूँगी। धन्यवाद!।

नाम : सरिता गुप्ता, आयु : 44 वर्ष, योग्यता : पी.एच.डी., कार्यः शिक्षिका, पता : शाहजहांपुर।

देश को बचाने में जो भूमिका आर्य समाज आज निभा रहा है वो वास्तव में ही प्रशंसनीय है। मैं पहले आर्य समाजी था लेकिन मुझे शंका भी थी, इतना ज्ञान भी नहीं था वह अपनी बात कहने से डरता था। लेकिन आर्य निर्मात्री सभा ने मेरे अन्दर एक ऐसा उबाल और ऐसा भूचाल ला दिया कि आज के बाद मैं एक सच्चा आर्य, पूर्ण आर्य और निडर बना। मैं आज यह बात दावे के साथ बोलता हूँ कि मुझे अपने देश को फिर से आर्यावर्त बनाना है।

जहाँ तक सहयोग की बात है तो मैंने आर्य समाज के हर कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया है और काम किया है और बाकी जो भी कार्य मुझे निमात्री सभा देगी तो मैं उसे पूरा करने में कोई कमी नहीं छोड़ूंगा।

नामः दयानन्द आर्य, आयुः 30 वर्ष, योग्यताः एम.ए, बी.एड़., कार्यः शिक्षक, पताः जवाँ, फरीदाबाद।

१-२ जून २०१६, आर्या प्रशिक्षण सत्र लगाकर मुझे बहुत खुशी हुई। बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं शुरू से ही मूर्ति पूजा नहीं करती थी। मैं गुरुकुल में पढ़ी थी, मेरे तो विचार शुरू से ही आर्या वाले थे लेकिन शादी के बाद बुजुर्गों की मानकर मैं मूर्ति-पूजा करने लगी। लेकिन अब मुझे अपना लक्ष्य समझ में आ गया है कि मुझे आर्य राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान देना है और पूरे राष्ट्र को आर्या एवं आर्य में बदलना है। सत्र में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला।

मैं राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के इस आर्या निर्माण मैं सच्चे मन से अपना योगदान देना चाहती हूँ। आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए यदि राष्ट्र/सभा को मेरी कहीं भी जरूरत होगी तो मैं तैयार रहूंगी। मुझे सेवा का मौका दें।

नामः सुदेश देवी आर्या, आयुः 30 वर्ष, कार्यः शिक्षण, पताः सीतलपुरी कॉलोनी, जीन्द।

मेरा यह सत्र बहुत अच्छा रहा। यह मेरा पहला सत्र था। इसमें मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। सबसे पहले मुझे पहले भगवान/ईश्वर पर विश्वास नहीं था। मैं नास्तिक थी लेकिन आचार्या के दिए गए तथ्यों ने मुझे ईश्वर को मानने पर विवश कर दिया। अब मैं ईश्वर को मानती हूँ और जानती हूँ और उपासना कल से शुरू करुँगी। दूसरा इन्होंने जो दयानन्द सरस्वती के बारे में बताया उससे मेरे अन्दर की आर्या जाग उठी है। मैं दयानन्द सरस्वती की लिखी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को अवश्य पढ़ूंगी। इसके अलवा मुझे देशभक्ति के लिए जो यहां से प्रेरणा मिली है कभी कहीं से नहीं मिली। आचार्या जी ने हमारे सामने अतीत और वर्तमान की देश की स्थिति बहुत ही सरल तरीके से बताई है। देशभक्ति की आग भड़क गई है। इन्होंने हमें हमारी गुलामी, हमारे देश की दयनीय दशा के बारे में बताया, मेरी तरफ से जितना हो सकेगा उतना सहयोग इस देश में विचार परिवर्तन के बारे में करूंगी। मैं मैडिकल स्टूडेन्ट हूँ और ईश्वर, आत्मा में विश्वास नहीं करती थी लेकिन आज से मुझे दोनों चीजों पर यकीन है। मैंने वेदों के बारे में सिर्फ सुना था कि यह ज्ञान का भंडार है लेकिन यहां मुझे यह पता चला कि वेद ईश्वर का संविधान है और इनमें इतना ज्ञान है कि अगर हम पूरी जिन्दगी इनको पढ़ें तो भी हमें इससे बार-बार पढ़ने से भी बहुत सारा ज्ञान प्राप्त होगा। वेदों में अनन्त ज्ञान है जिसको पढ़ने की इच्छा मेरे अन्दर पैदा हुई है। इन्होंने मुझे जो हमारे पुराने कवि हुए हैं उनकी मानसिकता को दिखाते हुये कि कैसे वो हमें आलसी, अंधविश्वासी बनाते हैं, आगे बढ़ने को प्रेरित किया है। मेरा सोभाग्य है कि मैं इस सत्र को लगा सकी।

हम आर्य निर्मात्री सभा में मन से सहयोग दे सकते हैं। और अगर मेरे लायक कोई कार्य हो तो मैं उसे बिना किसी आपत्ति के करुँगी।

नामः पूजा देवी, आयुः 30 वर्ष, योग्यताः बी.एस.सी., कार्यः छात्रा, पताः जीन्द, हरियाणा

मैंने यह प्रथम बार शिविर किया है। मुझे सुनकर बहुत अच्छा लगा। कम समय में आर्य सिद्धान्तों को सरल तरीके से सामान्य भाषा में सामान्य व्यक्तियों के हृदय में किस तरह से आपने उतारा यह बहुत ही प्रशंसनीय है। आपकी तपस्या, आपकी ओजस्वी वाणी, आपकी भावना उत्साह देखकर बहुत उत्साह मिला। एक नवीन पद्धति के माध्यम से जन-जन को जागृत करने का आपका प्रचार का कार्य मेरे लिए भी प्रेरणा का स्रोत बना। जब जहाँ जिस रूप में मुझे अवसर मिलेगा मैं इस कार्य को आगे बढ़ाऊगीं और अन्यों को भी इसके लिए प्रेरित करूगीं और करती रहूगीं।

मैं अपने सम्पर्क में आने वाले परिवार व अन्य सभी आस-पड़ोस के व्यक्तियों को अपने वैदिक आर्य सिद्धान्तों से अवगत कराकर अपने देश, धर्म, राष्ट्र को बचाने के लिए प्रेरित करवा कर आर्य निर्मात्री सभा का सहयोग करूगीं।

नामः प्रतिभा आर्या, आयुः 37 वर्ष, योग्यताः पी.एच.डी., नेट, व्यवसायः लेक्चरर, पताः गया, बिहार।

संध्या काल

आषाढ़- मास, वर्षा ऋतु, कलि-5120, वि. 2076 (18 जून 2019 से 16 जुलाई 2019)	श्रावण- मास, वर्षा ऋतु, कलि-5120, वि. 2076 (17 जुलाई 2019 से 15 अगस्त 2019)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)	प्रातः कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)	सांय कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्रि सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।